सोशल मीडिया में तकनीक और युवाओं की भूमिका

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र

युवाओं की देश की आबादी में भागीदारी सत्तर प्रतिशत के करीब होने के कारण है दुनिया का सबसे युवा देश भारत है। युवाओं की सोशल मीडिया के प्रति दीवानगी किसी से छिपी नहीं है। आज एक युवा औसतन दो से तीन घंटे का समय इंटरनेट और सोशल वेबसाइट पर बिताता है। जो समय इन युवाओं को अपने कैरियर बनाने में लगाना चाहिएए उस समय को वह बर्बाद कर अपने भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है। पर कुछेक नकारात्मक कार्यों को छोड़कर देखें तो ऐसे में देश को दिशा और दशा देने इसके साथ ही जनहित से जुड़े मुद्दे और सरकारए पुलिसए प्रशासन की नाकामियों और भ्रष्टाचार को उजागर करने का सशक्त हथियार सोशल मीडिया बन चुका है। देश के लोक सभा एवं कई राज्यों में बीते एक.दो वर्षों के चुनाव में सोशल मीडिया अपनी भूमिका और ताकत का एहसास करवा चुका है। वर्तमान में देश और भौगोलिक सीमाओं से परे दुनिया के अनेक देशों में अपनी सक्रियता के द्वारा सोशल मीडिया ने सूचना संचार के क्षेत्र में एक आंदोलन वृहत आन्दोलन का रूप दे दिया है। सूचना क्रांति का विस्फोट आज सोशल मीडिया ने सभी क्षेत्रों में कर रखा है।

सोशल मीडिया ने लिंग से परे जाकर वैश्विक दायरे से बाहर अनेक ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जिससे सोशल मीडिया की गंभीरता एभयावहता और व्यापकता का पता चलता हैद्य इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि सूचनाओं के विस्फोट ने सोशल मीडिया के इस आंदोलन के आगे जारी रहने से परंपरागत मीडिया काफी पीछे छूटता जा रहा हैद्य श्सोशल मीडिया की इस मुहिम से तो एक बात तो स्पष्ट हो गई है कि सिर्फ भारत जैसे विकासशील देश में ही नहींए बल्कि अमेरिका, इंग्लैंड, रूस और फ्रांस जैसे विकसित देश में भी अनेक तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।''[1]

ब्लॉग्स को आज पूरी दुनिया में नागर पत्रकारिता की प्राथमिक भूमि माना जाता है। ब्लॉग्स के जरिए पूरी दुनिया भर के सजग, बुद्धिजीवियों और सामान्य नागरिकों ने न केवल अपने देश की जनता से बल्कि एक प्रकार से पूरे विश्व के साथ संवाद स्थापित किया है। अकेले भारत की विभिन्न भाषाओं में लाखों की संख्या में ब्लॉग्स हैं। जिनमें लोग अपने समाज के साथ संवाद कर रहे हैं। इन ब्लॉग्स की विशेषता यह है कि उनके विषय अत्यंत विविध होते हैं । कुछ ब्लॉग्स विशुद्ध राजनीतिक हैं तो वहीं कुछ आर्थिक होने के साथ ही साहित्यिक और सांस्कृतिक भी हैं। सोशल मीडिया में मानव समाज से जुड़ा शायद ही कोई विषय होगा कि जिस पर ब्लॉग्स न होंद्य श्नए मीडिया ने संवाद को दो तरफा ही नहीं चौतरफा भी कर दिया है। आज किसी भी विषय पर आप अपनी राय नए मीडिया के किसी भी मंच पर रख दीजिएए आपको उस विषय पर हजारों की संख्या में मत मिल जाते हैं।''[2]

हिंदी में ब्लॉग्स लिखना आज सबसे लोकप्रिय विधा बन गया है। भारत के हिंदी प्रदेशों के अलावा गुजरात और महाराष्ट्र समेत विदेशों में रह रहे भारतीय लोग भी हिंदी में ब्लॉग्स लिख रहे हैं। एक आकलन के अनुसार इस समय हिंदी में लगभग चार लाख से अधिक ब्लॉग्स हैं। जिनमें एक लाख तो नियमित रूप से सूचना देने का काम कर रहे हैं, लेकिन इतनी संख्या होने के

बावजूद हिंदी ब्लॉग्स की विषय वस्तु में वह विविधता दिखाई नहीं देती, जो अंग्रेजी व अन्य विदेशी भाषाओं में दिखाई देती है। आधे से ज्यादा हिंदी ब्लॉग्स साहित्य, संस्कृति और धर्म से संबंधित हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि अधिकांश हिंदी भाषी पारंपरिक चीजों को पसंद करते हैं और इंटरनेट पर इन्हीं विषयों से संबंधित विषय वस्तु की खोज करते हैं। कहने का अर्थ यह है कि इन विषयों के पाठक आसानी से मिल जाते हैं। अन्य विषय मसलन विज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीति शास्त्र, भूगोल, मानव शास्त्र और यहाँ तक की दर्शनशास्त्र से संबंधित ब्लॉग्स अपवाद स्वरूप ही दिखाई देते हैं।''[3] हिंदी उपयोगकर्ताओं को उपरोक्त विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए बहुधा अंग्रेजी पर ही निर्भर रहना होता है। केवल ब्लॉग्स ही नहीं फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप पर भी आज बहुधा ऐसे ही विषयों पर सामग्री देखने को मिलती है।

मूलतः ब्लॉगिंग और फेसबुक के जरिए पहचान बनाने वाली युवा कविएलेखक और विद्वानों को किसी प्रकाशक,बड़े प्रतिष्ठित लेखकों और साहित्य जगत के मठाधीशों से प्रमाण पत्र लेने की जरुरत नहीं हो रही है। ये सब अपने लेखन के माध्यम से अपनी निजी पहचान सोशल मीडिया के माध्यम से बना रहे हैं। दरअसल फिर दोहराने की जरूरत है कि आज का युग सोशल मीडिया का युग है, इसलिए इससे जुड़ना अत्यावश्यक होने के साथ ही मजबूरी भी है। बीते दिनों टाइम्स आफ इंडिया में ट्विटर कहानियों के बहाने एक लेख छापा जिसमें दुनिया की सबसे छोटी कथा का जिक्र है। इसमें अवगत कराया गया है कि सिर्फ 6 शब्दों की यह कहानी शायद अर्नेस्ते हेमिंग्वे ने लिखी हैद्य कहानी बस इतनी सी है– (फॉर सेल बेबी शूज नेवर वोर्न ;बिकाऊ है बच्चे के जूते बिल्कुल अछूते)। आज सोशल मीडिया के माध्यम से साहित्य का लोकतंत्र बन रहा है। फेसबुक ट्विटर पर लिखने वाले लेखक किसी खलीफा, किसी मठाधीश से पूछकर, उससे सहमत, स्वीकृति लेकर नहीं लिख रहे हैं। यह नए लेखक प्रयोग कर रहे हैंए यह साहित्य का लोकतंत्र है, जो बन रहा है। इस सन्दर्भ में अरविंद जोशी ने कहा है कि सोशल मीडिया के द्वारा 'नई तकनीकी, नए मंचों को पहचान मिल रही है। विदेशों में इंटरनेट पर लिखे गए साहित्य के लिए पुरस्कारों की व्यवस्था है। पुस्तकों के बाहर भी साहित्य के लिए जगह बन रही है। देश में हिंदी के शुरुआती ब्लॉगरों में से एक प्रतीक पांडे ने कहा कि 'तकनीकी ने लेखन, साहित्य का लोकतंत्रीकरण किया है। साहित्य किसी सीनियर आलोचक की बपौती नहीं हैए जो यह लाइसेंस दे कि कौन लेखक और कौन कवि है। तकनीकी ने हर किसी को लेखक, कवि होना संभव किया है।किसने कैसा लिखा? यह सोशल मीडिया तय कर देगा।''[4]

आज सोशल मीडिया पर ट्विटर का ट्रेंड अधिक प्रचलन में है। इंटरनेट पर ट्विटर का अर्थ है किसी बात को बिना आधार के फैला देना। 'ट्रोल' शब्द को ट्विटर की संरचना के आधार पर हिंदी में प्रयोग किया गया है। यहाँ पर संज्ञा के एक शब्द को क्रियात्मक शब्द बना दिया 'ओंकार' के साथ। तब शब्द बन गया 'ट्रोल्लो' यह इंटरनेट पर स्थित ट्रोल नेटिजन द्वारा बनाई गई भाषा है। इस बात को मार्शल मैकलुहान की प्रचलित पंक्ति 'माध्यम ही संदेश है' से जोड़कर भी देखा जा सकता है।''[5]

समय–समय पर सोशल मीडिया के दुरुपयोग की खबरें आती रहती हैं और इसके नियमन की बातें भी अनेक मंचों पर उठती रहती हैं। अनेक सरकारें इसको रोकने का प्रयास करती हैं परंतु वास्तव में यह प्रतिबंध पूर्णता सफल नहीं होते क्योंकि यह नया मीडिया एक ऐसे माध्यम से जुड़ा हुआ हैए जिसे बाँधकर रख पाना तब तक संभव ही नहीं हैए जब तक उसे पूर्णता ही बंद न कर दें। वह है इंटरनेट। 'साथ ही साथ 'सूचना

प्रौद्योगिकी के विस्फोट और मोबाइल मीडिया यंत्रों के अभूतपूर्व विस्तार ने दुनिया के कोने.कोने को एक दूसरे के साथ जोड़ दिया है द्य आज एक देश की सूचना लगभग वास्तविक समय में दूसरे देश में पहुँच रही है।''[6]

इस समय भारत के करोड़ों लोग फेसबुक पर जुड़े हुए हैं और संख्या की दृष्टि से भारत फेसबुक का इस्तेमाल करने वालों में अमेरिका से भी आगे पहले नंबर पर हो गया है। ट्विटर में भी भारतीय लोगों की संख्या अच्छी खासी तेजी से बढ़ रही है। अगर कुछ वर्ष पहले की बात की जाये तो निश्चित तौर पर अनेक ऐसे घोटालों की कैग रिपोर्टस हैएजो पारंपरिक मीडिया में एक दिन के बाद गायब सी हो गईंए मगर सोशल मीडिया पर लोग उनके बारे में लगातार लिखते रहे हैं। पारंपरिक मीडिया पर इसका दबाव पड़ा। छिटपुट तरीके से कोलगेट की खबरें, समाचार पत्रों, टीवी चैनलों पर भी आने लगीं। सोशल मीडिया की वजह से पिछले कुछ सालों में बड़े मीडिया हाउसों की विश्वसनीयता भी खंडित हुई है। पेड न्यूज़ की चर्चा के साथ ही यह संकट और भी गहराया है। आम लोगों का मानना है कि व्यवसायिकता की वजह से बड़े मीडिया घराने सरकार के दबाव में रहते हैं। सोशल मीडिया और इंटरनेट का नियमन चीन जैसे देशों में तो संभव हैए लेकिन भारत जैसे देश में, जहाँ अलग.अलग विचार हमेशा से एक साथ रहते हैं और जहाँ बहस की अपनी स्वस्थ्य परंपरा है, सोशल मीडिया को किसी नियमन के तहत लाना उचित नहीं होगा। हाँ सरकार को अगर कुछ करना है तो उन्हें लोगों को और अधिक जानकारी देनी चाहिए या जागरूक बनाना होगा, ताकि वह अफवाहों के फेरे में पड़कर गलत जानकारियाँ ना फैलाएँ। उत्तर पूर्व या गुजरात के मामले में, जहाँ सोशल मीडिया के जरिए कई जानकारियाँ अफवाह बनी और कई आपत्तिजनक तस्वीरें शेयर की गई, जो निश्चित तौर पर गलत था, लेकिन गुजरात पुलिस के आयुक्त ने ट्विटर पर ट्वीट किया कि अगर किसी को दिक्कत हो तो वह सीधे संपर्क करें ।यह बहुत ही आश्चर्य की बात है कि कब ऐसा होता है कि कोई पुलिस कमिश्नर लोगों से सीधे संपर्क करता है,पर सोशल मीडिया ने इसे संभव कर दिखाया।

सोशल मीडिया पर सरकार को नियम बनाने से कोई रोक नहीं सकता,लेकिन कानून के नाम पर पूरे सोशल मीडिया पर नियमन करना, कितना उचित होगा। इस पर विचार करने की शिद्दत के साथ जरूरत है। यहाँ एक बात बहुत ही स्पष्ट है कि पाबंदियाँ लगाकर सरकारें ना तो कभी गलत कार्यों को रोक सकती हैं और ना रोक सकेंगीं। मगर कम से कम सोशल मीडिया पर मुक्त बहस के जरिए कई असामाजिक तत्वों पर रोक लगाने में सफलता तो मिल ही सकती है। सोशल मीडिया के समर्थकों का मानना है कि श्यह एक ऐसा सशक्त हथियार हैए जो कई स्तर पर असल लोकतंत्र लेकर आया है। सुदूर गाँव की खबरें अब दुनिया भर के लोगों तक पहुँच सकती हैं, सिर्फ और सिर्फ सोशल मीडिया के जरिएद्य सोशल मीडिया जैसी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर नियमों की बाढ़ लगाना अभिव्यक्त की आजादी पर हमला होगा, क्योंकि सरकारें अगर नियम बनाएंगीं तो फिर उनके नियम उनके फायदे के लिए होंगे लोगों के फायदे के लिए नहीं।''[7]

इसमें शायद ही कोई असहमत होगा कि सोशल मीडिया बहुत सारी जानकारी प्रदान करता है जिनमें से बहुत सी जानकारी भ्रामक भी होती हैं। कुछ विकृति मानसिकता के लोग साझा की गई जानकारियों को किसी भी प्रकार से तोड़. मरोड कर पेश कर सोशल मीडिया में पोस्ट कर देते हैं। किसी भी जानकारी का स्वरूप बदलकर वह उकसाने वाली बनाई सूचना बन जाती है। जिसका वास्तविकता से कोई लेना.देना नहीं होता है। यहाँ कंटेंट का कोई मालिक ना होने से मूल स्रोत का अभाव होता है। प्राइवेसी पूर्णता भंग हो

जाती है। फोटो या वीडियो की एडिटिंग करके भ्रम फैलाया जा सकता है जिनके द्वारा कभी.कभी दंगे–फसाद जैसी स्थिति या उसकी आशंका भी उत्पन्न हो जाती है। साइबर अपराध सोशल मीडिया से जुड़ी सबसे बड़ी समस्या है।''[8]

ऐसे में यह कहा जा सकता है कि डिजिटल मीडिया के सामने आने से सूचना के स्रोतों का पर्याप्त विस्तार हुआ है। प्राकृतिक आपदा या किन्हीं आपातकालीन परिस्थितियों में सोशल मीडिया से प्राप्त संदेश व सूचनाएँ प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सुर्खियाँ बन जाती हैं। उदाहरण के लिए नेपालए पाकिस्तान, जापान और इंडोनेशिया में आए भूकंप के दौरान यह हम देख चुके हैं, इसमें कोई दो राय नहीं की डिजिटल क्रांति ने आम से खास व्यक्ति की निजता को प्रभावित किया है, भले ही यह सोशल मीडिया सही अर्थों में पत्रकारिता नहीं है और ना ही यह एक संपूर्ण मीडिया की भूमिका निभा सकता हैए इसके बावजूद इसकी ताकत और असर को नज़र अंदाज भी नहीं किया जा सकता है द्य

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि नया मीडिया, नए समाज और वर्तमान सदी के समय का मीडिया है । इसकी भाषा में नए समय की दस्तक है। भारतीय युवाओं का देश है। देश की बहुसंख्यक युवा हैं ऐसे में लाजमी है कि उसकी भाषा पुरानी पीढ़ी से अलग हो।मोबाइल, इंटरनेट और वैश्वीकृत मीडिया ने आज भारतीय युवाओं को पूरे विश्व के साथ जोड़ दिया है। ''आज का युवा मीडिया के किसी एक माध्यम पर रुकना नहीं जानताए इसलिए वह नए मीडिया के सभी रूपों पर रहना चाहता है। पर अनेक बार देखने में आया है कि नए मीडिया पर भाषा को लेकर अनौपचारिकता असावधानी और उपेक्षा का रूप ले लेती है। इससे बचने की जरूरत है। आज का नया मीडिया इतना अधिक शक्तिशाली है कि देश और दुनिया की राजनीति में हलचल मचा सकता है। पर आवश्यकता इस बात की है कि इसकी भाषाए संचार और संवाद का काम करें और हर प्रकार के विभेद को नकारे।''[9]

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मीडिया का वर्तमान परिदृश्य–राकेश प्रवीर.ज्ञान गंगा प्रकाशनए दिल्ली 2020,पृष्ठ संख्या 177
2. हमारा समयए संस्कृति और नया मीडिया. राकेश कुमार. अनामिका पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली 2020, पृष्ठ संख्या 244
3. राजभाषा भारती, जून 2023,पृष्ठ संख्या 110–111
4. राजभाषा भारती, जनवरी 2030,पृष्ठ संख्या 49
5. विश्व हिंदी सम्मेलन, फिजी 2023. स्मारिका–प्रधान संपादक. रजनीश कुमार शुक्ला–विदेश मंत्रालयए भारत सरकार. 2023 ,पृष्ठ संख्या 111
6. हमारा समय, संस्कृति और नया मीडिया. राकेश कुमार– अनामिका पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली 2020, पृष्ठ संख्या 240
7. मीडिया का वर्तमान परिदृश्य–राकेश प्रवीर.ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2020, पृष्ठ संख्या 191
8. मीडिया का वर्तमान परिदृश्य–राकेश प्रवीर–ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली 2020,पृष्ठ संख्या 153
9. हमारा समय, संस्कृति और नया मीडिया–राकेश कुमार–अनामिका पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली 2020,पृष्ठ संख्या 221